International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 7 Issue 6, November-December, 2019, Impact Factor 5.246

प्रेम सिंह बरनालवी की लघुकथाओ में व्यक्त लोकजीवन एवं साम्प्रदायिकता

डॉ. भारती गुप्ता

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, एस.डी. पी.जी. कॉलेज,पानीपत

प्रेम सिंह बरनालवी जी का जन्म 29 अक्टूबर 1945 को हरियाणा प्रांत के अंबाला जिल के बरनाला नामक गांव के एक गरीब परिवार में हुआ| वह बचपन से ही अपने पारिवारिक रिश्तो से बहुत जुड़े हुए थे|साहित्य में अपने आगमन को लेकर बरनालवी लिखते हैं कि "जब सेना में रहते हुए वे हाई लॉन्ग पोस्ट पर गए तो काफी समय होने के कारण समीप के पुस्तकालय की तमाम पुस्तक उन्होंने पढ़ डाली |वहां के प्राकृतिक सौंदर्य तथा एकांत वातावर ण ने बरनालवी जी को काव्य सृजन के लिए प्रेरित किया| देवताओं का निवास कहे जाने वाली उस धरती पर पता नहीं कब क्यों और कैसे बरनालवी जी के भीतर से काव्य स्त्रोत फूट पड़ा| वहीं पर उन्होंने अपनी पहली रचना `मेरा मंदिर´ लिखी जो कि उनकी सबसे बेहतर काव्य रचना थी परंतु 30 पदों की लंबी रचना होने के कारण यह अभी तक अप्रकाशित है|इसके बाद बरनालवी जी हर समय प्रकृति का मानवीकरण कर कुछ ना कुछ लिखते ही रहे और धीरे धीरे एक प्रतिभाशाली और अनुभवी लेखक के रूप में उभर कर सामने आए| उन्होंने मानव मन की गहराइयों में उतर कर समस्याओं के मूल शुरू की खोज की|उनके पूर्वजों ने उन्हें जो संस्कार दिए, समाज ने जो अनुभव दिया और ईश्वर ने जो कौशल दिया , वह इन सभी विशेषताओं का खुलकर इस्तेमाल कर रहे थे| उनकी रचनाओं में विषय की मौलिकता व भावुकता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है|उनका साहित्य सृजन उनकी लोक कथाओ के माध्यम से ज्यादा उभर कर सामने आया जिसमे लोक कथा के माध्यम से सूक्ष्म मनः स्थिति यों को प्रभावी रूप से उकेरा गया है |लघुकथा के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ सतीश राज पुष्करणा के कहा कि`लघुकथा मानव मन की अभिव्यक्ति को कुछ शब्दो में प्रभावशाली ढंग से कहा देने की विधा है |´बरनालवी जी की लघु कथा के साथ साथ लोक चेतना प्रमुख रूप से उभर कर सामने आई है| लोक चेतना से अभिप्राय उनकी संसार को देखने की दृष्टि है जो कि उनके अंतर्मन में पूरी तरह छाई हुई है|बरनालवी जी ने समाज की यथास्थिति और उस पर कुरीतियों के बढ़ते प्रभाव को भलीभांति स्पष्ट किया| एक उदाहरण दृष्टवय है, "बाबूजी के चश्मे पर निगाह पड़ते ही धर्मराज ने द्वार बंद कर लिये
वह गिड़गिड़ाया ` महाराज बहुत भोगा है अब मुक्ति दो| ´

धर्मराज जरा अच्छे मूड में थे, पसीज गए, अच्छा तुम्हारा दिल कहां है?

वह तो मेरी बीवी के पास है| बड़ी शक्की मिजाज है| अक्सर उसी के पास रहता है| केवल वेतन या बोनस आदि के दिन थोड़ी देर के लिए देती है|तन्खा पिछले हफ्ते मिली थी और उसके अगले दिन वह मायके चली गई |
तुम्हारा मस्तिष्क?

वह तो साहब की दराज में है| हाजिरी के वक्त निकाल कर देता है शाम सीट छोड़ने से पहले उसे लौटाना पड़ता है| आज ऑफिस में छुट्टी है और साहब टूर पर है|
और तुम्हारी आत्मा?

वह तो आपके पुजारी जी के पास गिरवी रखी है| हर माह धर्मार्थ चंदे का आदेश है| पहले समय से देता रहा पर अब महंगाई में .... फिर आजकल माला के साथ उसके पास तलवार भी है , जाते वैसे ही डर लगता है|
और मन?
है! अभी तो यही था

बात दरअसल यह है कि कई साल पहले सस्ते में प्लाट खरीदा था |मकान अभी तक बनवा नहीं पाया पर एक पागल वह है जो रोज उस टुकड़े पर एक खूबसूरत ताजमहल खड़ा कर देता है|अब भी वही भटक रहा होगा|
ठीक है, जब यह सभी पास हो तब आना|"

बरनालवी जी ने महंगाई और परिस्थिति से जकड़े हुए एक सामान्य वेतन भोगी बाबू की मानसिक स्थिति को चित्रित किया और अपनी लोकोन्मुखी दृष्टि का सफलतापूर्वक प्रस्तुतीकरण करके लोक् जीवन के प्रति अपनी गहरी आस्था का परिचय दिया है| उन्होंने अपनी लघु कथाओं के माध्यम से वर्तमान परिस्थितियों का भी सार्थक चित्रण किया है जिसका एक उदाहरण इस प्रकार है :-

"दयनीय अवस्था में लेटा एक आदमी और उसके साथ 10 , 11 वर्ष की बालिका बड़े करुण स्वर में कह रही थी, ` बाबू जी !साहिब जी! इनकी टांग का ऑपरेशन करवाना है|आप लोगों के रहमों करम से गरीब रोजी-रोटी लायक हो जाएगा....´"

बरनालवी जी की के साहित्य में लोक् जीवन सर्वत्र व्याप्त है |उनकी संपूर्ण कथाएं ही लोक जीवन को समर्पित है| अपनी रचनाओं में उन्होंने हर पहलू को चित्रण किया है| एक उदाहरणइस प्रकार है

`सरकार बड़ा गड़बड़ हो गया

अरे कलवा सीधे-सीधे बोल!
सरकार छोटे मालिक को कमीनो की मन की से....

अरे तो इससे कौन पहाड़ टूट पड़ा |लौंडे की मौज मस्ती की उम्र है| अमरी मर्द भवरा होता है ,जो फूल अच्छा लगा सूंघा और मसल कर फेंक दिया |खैर उसे कहना , ज्यादा ऐसे लोगों को मुंह न लगाया करें

पर सरकार....
तनिक हंसते बोले "कुछ गड़बड़ हो गया होगा| सफाई के लिए पैसेवसै की जरूरत है यही न!
नहीं मालिक उसे छोटे मालिक को बुरी बीमारी लग गई है|

इस प्रकार स्पष्ट है कि समाज के ठेकेदार और उनकी संतान कुछ भी करें, उनके लिए सब उचित है| उनके लिए सहज मानदंड है परंतु जो गरीब है उन्हें कठोर से कठोर कठोर मानदंडों का सामना करना पड़ता है|

आज समाज में अनेक बुराइयां विद्यमान है जिनकी तरफ बरनालवी ने पाठक को अनेक सवालों सहित आकर्षित किया है|वे वर्तमान समाज में सुधार के पक्षधर है |आज के युग में व्याप्त बुराइयों , कमजोरियों को दूर कर एक स्वच्छ सुंदर समाज बनाने के पक्षधर है |इसके प्रयास उन्होंने अपनी साहित्य के माध्यम से किए हैं इनमें गरीबी और अमीरी के बीच व्याप्त अंतर और इन दोनों की जीवन शैली में व्याप्त विरोधाभास को स्पष्ट देखा जा सकता है| जहां पर गरीब धन के लिए तरसता है वही अमीर लोग अपने लिए आराम के साधनों पर ही आराम अपार धन खर्च कर देते हैं| प्रेम सिंह बरनालवी जी ने समाज के इसी कटु सत्य को सामने लाने का प्रयास किया है| उन्होंने अपने भावों द्वारा समाज के लोगों के दृष्टिकोण का चित्रण किया है| वह समानता के पक्षधर थे और बुराइयों से दूर रहकर अच्छाई की तरफ अग्रसर होने की प्रेरणा देते हैं| समाज में व्याप्त सांप्रदायिकता को भी उन्होंने अपने साहित्य में वर्णित किया है कि किस प्रकार यह वर्तमान में और अधिक बलवती होती जा रही है| इसका कारण लोगों में बढ़ती हुई धार्मिक भावना है| धर्म की आड़ में लोग अपने स्वार्थों की पूर्ति करने में लगे हैं| स्वार्थ पर राजनीति ने सांप्रदायिकता को अपना हथियार बना रखा है|राजनीतिज्ञ लोगों की कमजोरी का फायदा उठाते हैं और अपने कार्य सिद्ध करवाते हैं| लोगों में व्याप्त अंधविश्वास सांप्रदायिक दंगों का कारण बनता है |इसके अतिरिक्त उन्होंने समाज में व्याप्त सांप्रदायिकता को भी अपने साहित्य में चित्रित किया है बरनालवी जी ने `ऐसे लूटा था सोमनाथ´मे दर्शाया है कि किस प्रकार उग्रवाद के माहौल में तीर्थयात्री अंधविश्वास के कारण एक अकेले उग्रवादी का सामना नहीं कर पाते| आज सांप्रदायिकता एक गहरी समस्या का रूप धारण करके एक चुनौती बन गई है|धर्म स्थलों को अपवित्र करने वाली घटनाओं के पीछे किसी धार्मिक उद्देश्य की पूर्ति नहीं होती| सभी धर्म आपसी

भाईचारा का संदेश देते हैं परंतु धर्म के ठेकेदार कहे जाने वाले लोगों तक यह संदेश पहुंचने ही नहीं देते| किसी दूसरे धर्म की धार्मिक पुस्तकों को नष्ट कर देने में कोई धार्मिकता दिखाई नहीं देती| यह सब तो सांप्रदायिक दंगे भड़काने के एक साधन के रूप में किया जाता है| बरनालवी जी ने` लो ´नामक लघु कथा में समाज में व्याप्त सांप्रदायिक माहौल को चित्रित किया है |एक उदाहरण इस प्रकार है:

" किसी शरारती तत्व ने एक धर्मस्थल में रखे पावन ग्रंथ का अपमान कर दिया| इस खबर से चारों ओर हाहाकार मच गया| लोक समूहों में बढ़ने लगे |उत्तेजित भीड़ का भूगोल समझ प्रशासन को कर्फ्यू लगाना पड़ा| जो कई दिनों तक जारी रहा| इस बीच कितनी कीमती जाने गई और सारा कारोबार ठ्प्प हो गया| सबसे बड़ी दुकान की इस घटना ने दो समुदाय के बीच संशय की दीवार खड़ी कर दी|

बरनालवी जी ने अपनी रचनाओं में सांप्रदायिक माहौल और उससे उत्पन्न परेशानियों का खुलकर वर्णन किया है| उन्होंने अपनी लघु कथा 'उपदेश'´में दिखाया है कि किस प्रकार शहर बंद का विरोध करने वाले अपने ही नेता की मृत्यु पर उसी बंद का समर्थन करते हैं|बरनालवी जी ने अपनी रचना` गाय का मजहब ´में दो संप्रदाय के लोगों के द्वारा किए गए सांप्रदायिक व्यवहार का चित्रण किया |इसके साथ ही उन्होंने 'कहा जाओ' नामक लघु कथा में सांप्रदायिक माहौल और उससे उत्पन्न परेशानी को चित्रित किया है| एक उदाहरण इस प्रकार है `जय टेंट हाउस के मालिक जयराम नशे में धुत थे और कहा` चीखें बंद करो यह लाउडस्पीकर शालेय शरणार्थी लोग अब यहां आकर हमारा कारोबार उजाड़ना चाहते हैं बरनालवी जी ने स्पष्ट किया है कि अगर सांप्रदायिकता के माहौल में कोई व्यक्ति अपना काम धंधा करना चाहे तो लोग उसे करने नहीं देते| इसी प्रकार उन्होंने` दूसरा पहलू´ नामक लघु कथा में दर्शाया है कि किस प्रकार दो नेता अपने स्वार्थों के कारण सांप्रदायिक दंगे करवाते हैं परंतु आपस में खुद मिले हुए होते हैं| इसके अतिरिक्त संप्रदायिकता को बरनालवी जी ने 'मुर्दे की वापसी 'नामक लघु कथा में दिखाया है| उन्होंने सदा सांप्रदायिकता को गलत कहा क्योंकि इसमें दूसरे धर्म के विश्वासों को ठेस पहुंचानेकी भावना रहती है|यह हर जीव को संकीर्णता में विभाजित करती है|एक उदाहरण इस प्रकार है:-

` सुखबीर नारे लगा रहे थे ;यही मसान साडा है
हिंदू भाई चिल्ला रहे थे :यह शमशान भूमि हमारी है |
मुसलमान बिरादर भी अड़े थे :यह कब्रिस्तान हम लेकर रहेंगे |

तभी चार आदमी कमेटी की वैन में एक मुर्दा लेकर आए| लाश देख लोग चुप हो गए |आगंतुकों ने बताया कि यह लाश लावारिस है |जब उसके मुंह से कपड़ा हटाया गया तो दाढ़ी देखकर सिख वीर आगे आए:- हम इसका गुरमत रीति से संस्कार करेंगे| गुरसिख कभी लावारिस नहीं होता|

तभी बीच में से किसी ने पूछा :भाई इसका नाम क्या है? किसी ने कहां कि लावारिस है फिर भी देख लो शायद बाजू वगैरह पर कहीं लिखा हो| बाजू से कपड़ा सरकाया तो पीछे पीछे हट गए| ....हम रामलाल का संस्कार नहीं करेंगे| रामलाल के नाम से हिंदू भाई आगे आए| जब उसे नहला रहे थे तो सहसा एक ने देखा तो उसकी सुन्नत हुई थी|उन्होंने घृणा से मुंह बिचकाया लिए| अब लाश मुसलमानों के कब्जे में थी जैसे ही दफनाने की तैयारी करन लगे तभी मौलवी मेहंदी रंगी दाढ़ी पर हाथ फेरते बोले अरे हम इसे नहीं दफ़नाएगे, क्यों? एक ने पूछा?

हम मानते हैं यह जन्म से मुसलमान था पर इसमें तमाम उम्र काफिरों के बीच काटी है |उनके संग रहते इसकी लाशभी नापाक हो गई है |अब मुर्दा श्मशान घाट से शहर की ओर ले जाया जा रहा था| थोड़ी देर बाद एक कार आकर रुकी| एक नेता किस्म के सज्जन बाहर निकले और कहा .. डेड बॉडी कहां गई ?

क्यों? , किसी ने अनमने स्वर में पूछा..
अरे भाई वह एक महान स्वतंत्रता सेनानी था, पूरे 40 साल से गुमनामी में जी रहा था||सब चौंक गए.. अब थूक कर चाटने की सोचने लगे |"

इस प्रकार बरनालवी जी ने लाश के माध्यम से स्पष्ट किया है कि किस प्रकार से सांप्रदायिकता के कारण एक लावारिस लाश को विभिन्न संप्रदाय के हाथों से गुजरना पड़ता है| परंतु उसका संस्कार कोई भी करने को तैयार नहीं होता| धार्मिक संकीर्णता के कारण एक मुरदे को सब धर्मों के लोग नकारते हैं लेकिन जब उसके स्वतंत्रता सेनानी होने का पता चलता है तो सभी उसे स्वीकारने की सोचते हैं| लोगों में व्याप्त सांप्रदायिकता स्पष्ट देखी जा सकती है |साथ ही सांप्रदायिकता के साथ-साथ वह समाज में शांति बनाने और जनता की सेवा के लिए बनाए गए पुलिस विभाग की व्यवस्था के डगमगाने और भ्रष्ट होने के कारण बड़े ऑफिसर से लेकर छोटे सिपाही तक में कोई भी सामान व्यथा प्रदर्शित करने में नहीं हिचके |ऐसा प्रतीत होने लगता है जैसे उन्होंने इस विभाग को बहुत नजदीक से देखा और अनुभव किया |उन्होंने विभिन्न स्थितियों के माध्यम से पुलिस का जो चित्र सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया वह न केवल पंजाब की ही बल्कि संपूर्ण देश की एक प्रमुख समस्या के रूप में सामने आया है |उनकी 'रक्षक' नामक लघु कथा इसका उदाहरण है जिसमें उन्होंने जनता के रक्षकों की स्थिति को अंकित किया है| एक उदाहरण देखिए

'गश्त से लौटा सिपाही अपने मित्र से उत्साह पूर्वक बोला, भाई आज दिन बड़ा अच्छा रहा |
अच्छा माने आपने किसी उग्रवादी को पकड़ा होगा
नहीं...
तो मुठभेड़ में मारा होगा?

जी नहीं...
तो फिर कोई ना कोई खास बात जरूर हुई होगी
जी कुछ भी खास नहीं..
सिपाही ने इधर उधर देख धीरे से कहा , भई, आज एक जगह आड़ ली की किसी उग्रवादीकी मुझ पर नजर ही ना पड़ी और मैं सही सलामत अपने ठिकाने आ गया|

इसमें जनता के रक्षक की कर्तव्य विमुखता को प्रदर्शित किया गया और एक सवाल उभर कर हमारे सामने आता है कि यदि जनता के रक्षक ही असुरक्षा महसूस करेंगे और अपने कर्तव्य से पीछे हटेंगे तो जनता की रक्षा कौन करेगा? उन्होंने कहा कि कानून के रक्षक स्वयं तो कानून तोड़ते ही हैं परंतु लोगों के द्वारा कानून के उल्लंघन पर उन्हें दंडित करते हैं| वे बताते हैं कि पुलिस वाले स्कूटर पर नियम के खिलाफ दूसरी सवारी को बिठाया हुआ देखकर दोनों से पैसे लेते हैं , थोड़ी देर बाद भी खुद ही स्कूटर को रोककर उस पर दूसरी सवारी बिठा देते हैं| तब उनके लिए कोई नियम कोई नियम तथा कानून नहीं होता|वे न जाने किस प्रकार से आतंकवादी नकाबपोश के छिपे हुए हथियार देखकर नाका खोलकर उन्हें जाने देते हैं परंतु एक गरीब ऑटो वाले से रिश्वत लेकर उसे जाने देते हैं| उनकी रचना विभाजन रेखा ´में तो पुलिस वालों की स्थिति बड़े अच्छे ढंग से उन्होंने चित्रित की है |एक सीमांत प्रदेश में अपनी आखिरी सांस लेते हुए व्यक्ति की दोनों तरफ से पुलिस वाले कोई सहायता नहीं करते बल्कि वे उसे अपनी अपनी हद में न होने का बहाना बनाकर एक दूसरे को जिम्मेदार बताते रहते हैं |इसी बीच वह व्यक्ति दम तोड़ देता है| वह तो अमानवीय की हद से भी आगे प्रतीत होते हैं| इस प्रकार बरनालवी जी ने समाज में व्याप्त सांप्रदायिकता और पुलिस विभाग में हो रही अमानवीयता के ऊपर करारा व्यंग किए हैं| विभिन्न विषयों के द्वारा इनके द्वारा किए जा रहे अन्याय शोषण और मान्यता का जो चित्र उन्होंने प्रस्तुत किया है वे वास्तव में हमारे दिल को हिला देने वाला है| उन्होंने दर्शाया है कि जब रक्षक ही भक्षक बन जाए तो साधारण जनता क्या करे |इस प्रकार जीवन से प्राप्त अनुभव को बड़ी यथार्थता के साथ दर्शाते हुए उन्होंने समाज के विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं| उनके भीतर समाज में सामाजिक राजनीतिक धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन इत्यादि में गिरावट के प्रति तीव्र आक्रोश है|इस कारण उन्होंने आज की बुराई को सामने लाने के लिए अपने साहित्य को प्रमुख आधार बनाया| उनका साहित्य हमारे भीतर के अंधकार को हराता है तथा प्रकाश फैलाता है जिसका काम संवेदना के तार को छिन छिन करना है और इसी में प्रेम सिंह बरनालवी के साहित्य की सफलता का रहस्य भी छुपा है|

संदर्भ

- प्रेम सिंह बरनालवी :देवता बीमार है, पृष्ठ संख्या 64
- प्रेम सिंह बरनालवी : बहुत बड़ा सवाल, पृष्ठ संख्या 85

- प्रेम सिंह बरनालवी :तस्वीर कभी नहीं टूटती, पृष्ठ संख्या 25
- सतीश राज पुष्करणा:लघु कथा बहस के चौराहे पर पृष्ठ संख्या 218